भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में वैज्ञानिक लैंडफिल उपचार पर केंद्रित ईओएनवायरमेंट-2026 का उद्घाटन

भुवनेश्वर, **22 मई**, **2026:** स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर**,** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 22 मई 2026 को हाइब्रिड मोड में विरासती कचरे के लैंडफिल खनन (जियोएन्वायरमेंट-2026) पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य लैंडफिल खनन और बायोमाइनिंग पहल के माध्यम से पुराने अपशिष्ट डंपसाइटों के उपचार से जुड़ी उभरती पर्यावरणीय और नियामक चुनौतियों का समाधान करना है।

मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर, श्री चंचल राणा, आईएएस, आयुक्त, भुवनेश्वर नगर निगम (बीएमसी) ने शहरी अपशिष्ट प्रबंधन की बढ़ती चुनौतियों पर प्रकाश डाला और स्केलेबल, किफायती और टिकाऊ लैंडफिल उपचार समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। चल रहे भुआसुनी डंपसाइट निवारण का उल्लेख करते हुए, उन्होंने विरासती अपशिष्ट चुनौतियों से निपटने में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों, वैज्ञानिक अपशिष्ट लक्षण वर्णन और परिपत्र अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कार्यशाला भारत में टिकाऊ शहरी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए व्यावहारिक समाधान विकसित करने में योगदान देगी।

श्री देबाशीष दास, निदेशक (वाणिज्यिक), ग्रिडको, भुवनेश्वर ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं के महत्व और पर्यावरणीय स्थिरता को आगे बढ़ाने में सहयोगात्मक अनुसंधान की भूमिका को रेखांकित किया।

डॉ. उषारानी पटनायक, अतिरिक्त मुख्य पर्यावरण वैज्ञानिक, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, ओडिशा ने टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन में बायोमाइनिंग और वैज्ञानिक लैंडफिल उपचार के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने पुराने अपशिष्ट निपटान में ओडिशा की प्रगति पर प्रकाश डाला, यह देखते हुए कि राज्य में 102 पहचाने गए डंप स्थलों में से 91 का पहले ही उपचार किया जा चुका है, जिससे लगभग 350 एकड़ भूमि को पुनः प्राप्त किया जा चुका है।

उद्घाटन भाषण देते हुए, कार्यशाला के संयोजक डॉ. मोहित सोमानी ने भारत में वैज्ञानिक और टिकाऊ लैंडफिल खनन प्रथाओं की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से शहरी स्थानीय निकायों में जमा हुए पुराने कचरे की बढ़ती मात्रा को देखते हुए। कार्यशाला के सह-संयोजक प्रोफेसर राजेश रोशन दाश ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

उद्घाटन कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण लैंडफिल माइनिंग पर एक पुस्तक का अनावरण था, जो टिकाऊ उपचार प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं पर बढ़ते अकादमिक और व्यावहारिक फोकस को दर्शाता है।

दो दिवसीय कार्यशाला में पडोवा विश्वविद्यालय, इटली, आईआईटी दिल्ली, आईआईटी गुवाहाटी, आईआईटी खड़गपुर, आईआईटी (बीएचयू) वाराणसी, एनआईटी त्रिची और एस्टोनियाई यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ साइंसेज सहित प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा आमंत्रित वार्ता और तकनीकी विचार-विमर्श शामिल हैं। कार्यशाला के तकनीकी सत्र विरासती कचरे के लक्षण वर्णन, लैंडफिल खनन प्रौद्योगिकियों, प्रक्रिया अनुकूलन, उत्सर्जन नियंत्रण, बरामद सामग्रियों का मूल्यांकन, साइट उपचार, जीवन चक्र मूल्यांकन और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन में भविष्य की दिशा जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

कार्यशाला में शहरी स्थानीय निकाय के अधिकारियों, पर्यावरण सलाहकारों, शोधकर्ताओं, संकाय सदस्यों, नीति निर्माताओं और पर्यावरण और भू-पर्यावरण इंजीनियरिंग के क्षेत्र में काम करने वाले छात्रों ने भाग लिया है।

यह आयोजन टिकाऊ बुनियादी ढांचे के अनुसंधान को आगे बढ़ाने और समकालीन सामाजिक चुनौतियों के लिए पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार समाधानों में योगदान देने के प्रति आईआईटी भुवनेश्वर की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।